**International Journal of Multidisciplinary Research and Development**
**Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979**
**Impact Factor: RJIF: 5.72**
**www.allsubjectjournal.com**
**Volume 3; Issue 2; February 2016; Page No. 49-51**

# रीति और शैली–एक विवेचन

**डॉ. शिवदत्त शर्मा**

पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र।

भारतीय काव्य–शास्त्र परम्परा का इतिहास बहुत प्राचीन है। समय समय पर अनेक तर्कवितर्कों से गुजर कर ही किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ है तथा उसके बाद भी यह परम्परा चलती रहती थी। अन्य काव्य सिद्धान्तों में भी यही नियम अथवा परिपाटी चलती रही। यही कारण है कि आज भी अनेक सिद्धान्त उसी प्रकार अकाट्य हैं जिस प्रकार स्थापित किए गए थे। रीति और शैली को लेकर कई तरह के मत मतान्तर सामने आते हैं। कई आलोचकों का मत है कि दोनों एक ही हैं परन्तु कुछ विद्वान् आलोचक विशेषकर पाश्चात्य विद्वान इसे एक दूसरे से भिन्न मानते है
भारतीय काव्य शास्त्र में रीति और शैली शब्दों का तात्पर्य काव्य–अभिव्यंजना की प्रणाली से लगाया जाता है। प्रथम दृष्ट्या तो दोनों शब्द पर्यायवाची प्रतीत होते हैं, परन्तु फिर भी इन दोनों में समानता को लेकर विद्वानों में अलगअलग मत प्राप्त होते हैं।

## रीति विषयक अवधारणा

सर्वप्रथम भारतीय काव्यशास्त्र में प्रचलित रीति शब्द का प्रयोग ऋग्वेद् की एक ऋचा में मिलता है– महीव रीतिः शवसासरत् पृथक्। इस ऋचा में रीति शब्द का प्रयोग धारा के अर्थ में हुआ है। एक अन्य स्थान पर रीति शब्द का प्रयोग स्वभाव या गति के अर्थ में भी हुआ है–

तामस्य रीतिः परशोरिव?

भारतीय काव्यशास्त्र में रीति शब्द का प्रयोग गति, चलन, मार्ग, पथ, ढंग, आदि अर्थों में भी प्रयुक्त हुआ है। भोजराज ने भी रीति शब्द की व्युत्पत्ति के संबन्ध में अपना मंतव्य इस प्रकार व्यक्त किया है–

वैदर्भादि कृतः पन्था काव्यमार्ग इति स्मृतः।
रींङ् गताविति धातोंः सा व्युत्पत्या रीतिरुच्यते।।[1]

अर्थात् वैदर्भी गौडी आदि काव्य मार्ग कहे गए हैं। गत्यर्थक रींङ् धातु से व्युत्पत्ति के कारण इसे रीति कहा जाता है।इससे पूर्व आचार्य भामह, दण्डी आदि ने रीति शब्द के लिए काव्यमार्ग, गिरामार्ग आदि शब्दों का प्रयोग किया है।[2]
रीति सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य वामन ने विशिष्ट पद रचना को ही रीति कहा है– विशिष्ट पद रचना रीतिः।[3]
आचार्य वामन ने इस की और व्याख्या करते हुए इन विशिष्ट पदों की भी व्याख्या की है तथा स्पष्ट किया है कि विशिष्ट पद की आत्मा गुण है, और गुणों के अन्तर्गत रचना की गाढता–ओज, शिथिलता–प्रसाद, पदों की मसृणता–श्लेष, आरोह–अवरोह, पदों की पृथकता, आदि के साथसाथ अर्थ की विमलता, अर्थ चमत्कार, आदि का समावेश किया है। वामन ने रीति को काव्य की आत्मा तथा गुणों को रीति की आत्मा कहा है। वामन ने रीति के अन्तर्गत जिन गुणों का वर्णन किया है, वे सभी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से काव्य रचना के ढंग को अभिव्यक्त करते हैं।
आचार्य वामन के बाद आचार्य रुद्रट ने रीति को समास से सम्पृक्त कर दिया, अर्थात् उन्होंने काव्य रचना में प्रयुक्त समासों के अभाव, स्वल्पता या आधिक्य के आधार पर काव्य को विशिष्ट रीति के अन्तर्गत रखा।[4]
इसके उपरान्त आचार्य आनन्दवर्धन ने रीति को संघटन अर्थात् पदरचना कहा है और उसे समास से संबन्धित स्वीकार किया है।
आनन्द वर्धक के परवर्ती कुन्तक ने रीति को पहली बार कवि–स्वभाव से जोडकर देखा। उन्होंने इसे मार्ग नाम से अभिहित किया, परन्तु कुन्तक ने भी व्यावहारिक रूप से रीति और कवि–स्वभाव का संबन्ध सिद्ध नहीं कर सके।[5]
आचार्य विश्वनाथ ने इसका नाम रीति की जगह वृत्ति रखा तथा इसी शब्द का प्रयोग साहित्य दर्पण में किया है।इसे समास, रस, व गुण के साथ संबद्ध कर दिया।[6]
इससे सिद्ध होता है कि अधिकांश आचार्यों ने रीति शब्द के लिए भिन्न–भिन्न शब्दों का प्रयोग अवश्य किया, परन्तु अभिप्रायः काव्य रचना धर्मिता से ही रहा। नाम विषयक मतभेद होते हुए भी उन्होंने काव्य में पद–रचना वर्ण–योजना, संघटना आदि के लिए ही रीति शब्द का प्रयोग किया।

## शैली विषयक अवधारणा

सामान्यतः किसी काम को करने के ढंग या प्रणाली को शैली कहा जाता है। मनुस्मृति के टीकाकार कुल्लक भट ने शैली शब्द का अर्थ प्रणाली या पद्धति ग्रहण किया है।

प्रायेण आचार्याणामियं शैली यत् सामान्येन विशेषेण विवृणोति।

वास्तव में शैली शब्द की व्युत्पत्ति का शील से गहरा संबन्ध है। शील का संबन्ध स्वभाव से है। सब का अलग अलग स्वभाव होता है। काव्य में शैली शब्द कवि की विशेष काव्यरचना अथवा अभिव्यंजना पद्धति के रूप में ग्रहण किया जाता है।
आचार्य कुन्तक के अनुसार कवि के स्वभाव के अनुसार ही उसकी रचना शैली को मान्यता मिलती है।[7] प्रत्येक कवि की अपनी रचना शैली होती है जो शैली तुलसी दास की है वही आचार्य केशव दास की नहीं है। तुलसी विषय वस्तु के साथ साथ पारंम्परिक छन्दों दोहा, चैपाई, के प्रयोग पर बल दते हैं। जबकि आचार्य केशव दास अलंकारों के प्रयोग के कारण प्रसिद्ध हैं। इसी तरह बिहारी और घनानन्द को लिया जा सकता है। इस तरह शैली वह विशिष्ट रचना पद्धति है जो किसी कवि के भावों को कोमल मन वाले पाठक या दर्शक तक पहुंचा कर आनन्द उत्पन्न करने के साथसाथ उस रचनाकार की भी पहचान बन जाती है, जिसे देखते ही पाठक या दर्शक उस रचनाकार को पहचान जाते हैं।
रीति की तुलना में शैली का बहुत कम विवेचन हुआ है। पाश्चात्य काव्य शास्त्र में शैली को अत्यधिक महत्व मिला है तथा इसकी व्यापक चर्चा मिलती है। अतः पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों ने शैली को किस अर्थ में ग्रहण किया है, इसे जानना परम आवश्यक है।

**पाश्चात्य काव्य शास्त्र और शैली**

पश्चात्य साहित्य के अन्तर्गत अंग्रेजी भाषा में शैली शब्द के पर्याय के रूप में स्टाइल शब्द का प्रयोग मिलता है। स्टाइलस लैटिन शब्द से निर्मित इस शब्द का अर्थ है कलम। स्पष्ट है कि काव्यशास्त्र के अनुसार शैली शब्द का अर्थ कवि की लेखन या रचना–पद्धति है। कुछ अन्य पाश्चात्य काव्य शास्त्रियों ने इस संबन्ध में अपने विचार व्यक्त किए हैं जिन का विवरण इस प्रकार है–

**1 प्लेटो**

अपनी कृति आयोन और रिपब्लिक में कवि, दकला, और कलाकार पर विचार प्रस्तुत करते हुए प्लेटो ने तीन प्रकार की शैलियो का उल्लेख किया है। सहजसरल, विचित्र, और मिश्र शैली। इनमें प्लेटो ने मिश्र शैली को सर्वश्रेष्ठ माना है। इन तीनों ही रूपों का समाहार कुन्तक द्वारा प्रस्तुत सुकुमार, विचित्र, तथा मधुर गुणों में हो जाता है।[8]

**2 अरस्तु**

अरस्तु ने शैली के दो मूल गुण माने हैं।स्पष्टता और औचित्य। इसी प्रकार अरस्तु ने शैली के दो भेद माने हैं– साहित्य शैली और विवाद शैली। आगे चलकर अरस्तु ने विवाद शैली के भी दो उपभेद स्वीकार किए हैं– संसद की शैली और न्यायालय की शैली। अरस्तु ने शैली के चार दोषें का भी उललेख किया है– 1– समासों का अधिक प्रयोग 2– अप्रचलित शब्दों का प्रयोग 3– दीर्घ,अनुपयुक्त व अधिक विशेषणों का प्रयोग 4– दूरारूढ तथा अनुपयुक्त रूपकों का प्रयोग

**3 सिसरो**

सिसरो ने शैली के दो प्रकार माने हैं। 1– ए्रटिक शैली 2– ऐशियाटिक शैली। सिसरों ने शैली के चार तत्वों का भी उल्लेख किया है–

क– उपयुक्त शब्द चयन ख– स्पष्ट तथा मुहावरेदार भाषा ग– चुने हुए शब्दों में सामंजस्यपूर्ण रचना घ– कर्कशता–रहित वर्ण–संघटन या गुम्फ

**4 होरेस**

आलोचक होरेस ने तीन पत्र काव्यों में काव्यशैली को स्पष्ट करते हुए लिखा है– काव्य शैली विवेक सम्मत तथा स्पष्ट शब्दयोजना है। यदि आप एक दक्षतापूर्ण संयोजन से सुविदित शब्द को नवीन करके प्रस्तुत करेंगे, तो आपकी शैली श्रेष्ठ हो जाएगी। इस तरह स्पष्ट है कि होरेस काव्य शैली में शब्द विन्यास पर ही बल देते हैं। उनके अुसार काव्य शैली में शब्द महत्व पूर्ण नहीं हैं, अपितु सुबोध विन्यास महत्वपूर्ण है। शब्द विन्यास ही काव्य में सौंदर्य और सम्मोहन भर देता है जोकि अच्छी लेखन–शैली का जीवन है।

**5 क्विंटिलियन**

क्विंटिलियन सिसरो से प्रभावित थे। उन्होंने सुन्दर वाणी के साथसाथ सुन्दर रचना–पद्धति पर भी बल दिया। उनके अनुसार शैली के तीन प्रकार हैं–

क– साधारण शैली ख– भव्य शैली ग– सम शैली । उन्होने अतिशयोक्ति पूर्ण एवं शब्दाडम्बर युक्त शैली को असाहित्यिक माना है।

**6 लोजाइनस**

इन के अनुसार आत्मा की महत्ता की प्रतिध्वनि ही काव्य की महान् शैली है। इन्होंने उदात्त साहित्य की रचना के लिए कवि को पांच स्त्रोतों का उचित समन्वय करने के लिए आग्रह किया है।

**7 विलियम वर्डसवर्थ**

इन्होंने काव्य में जनसामान्य में प्रचलित भाषा का प्रयोग करने पर बल दिया है।उसमें अलंकारों का भी प्रयोग किया जा सकता है। अलंकार का प्रयोग यांत्रिक ढंग से न किया जाए। जन सामान्य की भाषा में प्रचलित गंवारपन, फूहडपन आदि को दूर कर उसे सुरूचिपूर्ण बनाने पर भी बल देते हैं।[9]

**8 मैथ्यू आर्नल्ड**

इन्होंने काव्यात्मक महानता की अवधारणा को प्रस्तुत करते समय व कवियों को प्राचीन कवियों की तीन बातें– उचित विषय चयन, सही निर्माण की आवश्यकता और अभिव्यंजनाकी गौणता को सीखने का परामर्श दिया है। उन्होंने भव्य शैली को श्रेष्ठ माना है। उन्होंने होमर, दान्ते, व मिल्टन की प्रशंसा की है तथा शेक्सपीयर की शैली को क्लिष्ट अभिव्यक्ति कहा है।

**9 वाल्टर पीटर**

इनके अनुसार शैली के तीन तत्व होते हैं, काव्यभाषा, शब्द–समन्वय, तथा व्यक्तित्व। पीटर के अनुसार शैली में ये तीनों तत्व महत्व पूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**10 लुई डुडले**

इन्होंने शैली को कवि का व्यक्तित्व कहा है जिसे वह भाषा के प्रसाधन, तत्वों या योजना द्वारा अभिव्यक्त करता है।

**11 जे मिडिलटॉन मर्री**

इनके अनुसार शैली भाषा का विशिष्ट गुण है, जो रचयिता के भावों और विचारों को अच्छी तरह से सम्प्रेषित कर सके।

इस तरह सारांशतः कहा जा सकता है कि पाश्चात्य काव्य शास्त्रियों ने स्पष्ट रूप से शैली को कवि स्वभाव से ही जोड कर प्रस्तुत किया है। भारतीय काव्य शास्त्र में भी शैली, रीति विषयक अवधारणा से होकर कवि स्वभाव तक जा पहुंची है उसी प्रकार पाश्चात्य काव्य शास्त्र में भी शैली गुणों से आरम्भ होकर कवि स्वभाव पर पहुंचकर ठहर जाती है। प्लूटो और कुन्तक में समानता का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त शैली दोषें में भी समानता दिखाई देती है। सिसरो के शैली भेद भी आचार्य दण्डी द्वारा प्रस्तुत वैदर्भी व गौडी रीति के समान प्रतीत होते हैं। क्विंटिलियन ने भारतीय आचार्यों की ही तरह शैलियों का प्रादेशिक आधार पर नामकरण किया है। उस तरह प्राचीन पाश्चात्य काव्यशैलियों का शैली–विवेचन भारतीय रीति के सर्वथा अनुकूल है।

इसके विपरीत आधुनिक युग के पाश्चात्य चिंतकों के शैली विषयक मतों में परिवर्तन दिखाई देता है। वर्डसवर्थ व अन्य स्वछन्दतावादी कवियों ने सहज–स्वाभाविक शैली को उपयुक्त तथा चेष्टापूर्वक प्रयुक्त शैली को साहित्य के लिए अनुपयुक्त सिद्ध किया है। पीटर शैली का सम्बन्ध मस्तिष्क व आत्मा से जोडते हैं तथा उसे रचयिता के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग मानते हैं। इस तरह थोडे समय के उपरान्त शैली और रीति व्यक्ति सापेक्ष हो गई। प्रत्येक कवि की अपनी निजी शैली या रीति हो सकती है– इसे स्वीकार कर लिया गया है।

आधुनिक काल में रीति व शैली को समानार्थी मान लिया गया है। वर्तमान में दोनों में अभेद दृष्टि देखने को मिलती है। रीति और शैली में सूक्ष्म अन्तर भारतीय आलोचकों के अनुसार होता है। ये दोनो एक दूसरे के विपर्यय नहीं हैं, थोडा सा अन्तर इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–

1 रीति के निश्चित भेद किए जा सकते हैं जबकि शैली प्रत्येक कवि के व्यक्तित्व के आधार पर निश्चित होती है।
2 रीति विषय सापेक्ष है जबकि शैली कवि सापेक्ष है।
3 रीति में सहृदय की दृष्टि को प्रधानता दी जाती है, जबकि शैली में कवि की दृष्टि को ही महत्व दिया जाता है।
4 रीति के लिए गुण,अलंकार आदि का अध्ययन,अभ्यास आदि आवश्यक है,जबकि शैली तो कवि की सहज स्वाभाविक अनुभूति की अभिव्यक्ति है।

इस तरह सूक्ष्म अन्तर के होते हुए भी रीति और शैली को एक दूसरे का पर्याय ही माना जाने लगा है, विपर्यय नहीं।

**सन्दर्भ सूचि**


| | | |
|---|---|---|
| 1 | भोज राज | सरस्वती कण्ठाभरण पृ 34 |
| 2 | आचार्य भामह | काव्यालंकार पृ64 |
| 3 | आचार्य वामन | काव्यालंकार सूत्र पृ76 |
| 4 | रूद्रट | काव्यालंकार पृ88 |
| 5 | आनन्द वर्धन | ध्वन्यालोक पृ 116 |
| 6 | आचार्य विश्वानाथ | साहित्य दर्पण पृ123 |
| 7 | कुन्तक | वक्रोक्तिजीवितम् पृ145 |
| 8 | डॉ रामचन्द्र तिवारी | भारतीय व पाश्चात्य काव्य शास्त्र तथा हिन्दी आलोचना पृ 92 |
| 9 | उपरोक्त | पृ 113 |